Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

सती से राष्ट्रपती; भारतीय राजनिती में महिलाओं की सक्रीयता

प्रा. डॉ. माधव केरबा वाघमारे, सहयोगी प्राध्यापक, (राज्यशास्त्र विभागप्रमुख), कै. न्हानाभाऊ मन्साराम तुकाराम पाटील कला महाविद्यालय, मारवड, ता. अमळनेर जि. जळगांव महाराष्ट्र

शोधपत्र सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय महिलाओं की प्राचीन काल से वर्तमान तक स्थिती और भारतीय राजनीति मे सक्रियता का अध्ययन किया है प्राचीन भारत मे महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण था लेकिन बाद मे महिलाओं को दुय्यम रखा गया, समाज और धर्म ने चार दिवारो मे उसे जखड लिया, यह नही बल्की वेद पठण शिक्षा तथा वैचारिक आदान-प्रदान से भी उनको वंचित रखा, मनुस्मृतीने महिलाओ पर निर्बंध लगाये इस वजह से उनका मानसिक एवं भावनिक खच्चीकरण हुआ, समाज मे रूढी प्रथा कर्मकांड तथा परंपराओ मे बंदिस्त कर मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार बनाया. बालविवाह, सतीप्रथा जैसी क्रूर प्रचलित प्रथा से उनके जीवन मे अधिकारो को छिन लिया। महिला की इस अवस्था पर भारत मे समाजसुधारकोने आवाज उठाकर अधिकार देने का प्रयास किया, इस वजह से महिलाओ के अधिकार हेतू आंदोलन हुए इस वजह से महिलाओंको अधिकार और सन्मान मिला।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओंको समानता का दर्जा दिया, समानता के सिद्धांत को संविधान में लागू कर मौलिक अधिकार कर्तव्य और निर्देशक सिद्धांत को प्रस्तावित किया. भारतीय संविधान ने न केवल महिलाओं को समानता का दर्जा दिया बल्की महिलाओ के पक्ष मे सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने के लिए राज्य को सशक्त बनाया इसी वजह से स्वतंत्रता के बाद महिलाओ के जीवन के हर क्षेत्र मै भागीदारी बढी. राजनीति मे महिलाओं की सक्रियता मै उत्तरोत्तर सुधार हुआ हैं, आज पंचायत से लेकर संसद तक राष्ट्र ीय राजनीती मे बढावा मिला.

वर्तमान राजनीतिके नये आयाम बनाये जा रहे हैं. जिसमे महिलाओ का सन्मान रूप से प्रोत्साहित किया जा रहा है. यह उपलब्ध का लाभ लेते हुए महिलाओ ने पंचायत से राष्ट्र पती पद तक उडान भरकर अपने उन्नती के नये द्वार खोले. इस प्रकार प्राचीन भारत मे सती जानेवाली महिला आज देश की महिला महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मु राष्ट्र पती बनकर राजनीति मे सक्रिय हो गई.

उद्देश्य

1. भारतीय राजनीति मे महिलाओं की सक्रियता का अध्ययन करना.
2. भारतीय राजनीती मे महिलाओ के योगदान का अध्ययन करना.
3. वर्तमान भारतीय राजनीती मे महिलाओं की भूमिका अध्ययन करना.

परिकल्पना

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही राजनीति मे महिलाओ का योगदान महत्वपूर्ण था।
2. वर्तमान भारतीय राजनीतिमे महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।
3. भारतीय राजनीति में महिलाओं का प्रभाव बढ रहा है।

अध्ययन पद्धती

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

प्रस्तुत अध्ययन के लिए द्वितीय स्त्रोत अध्ययन पद्धतीका प्रयोग किया है जिससे पत्र, पत्रिका व समाचार पत्र एवं विभिन्न वेबसाईट एवं पुस्तको, ग्रंथो के माध्यम से किया गया है.

शब्द कुंजी

भारतीय महिला की स्थिती सुधारो कों का योगदान संविधानिक उपलब्धिया राजनीति मे महिलाओं की सक्रियता, राजनीति में महिलाओं की भागीदारी एवं स्थिती वर्तमान राजनीति में योगदान .

प्रास्ताविक

महिला आज देश के सर्वोच्च तथा सशक्त पदोपर कार्यरत है भारतीय राजनीति मे महिलाओ ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है. प्राचीन काल मे महिलाओ का स्थान दुय्यम माना जाता था समाजसुधारकोने उनकी वास्तवीक स्थिती बदलने का जोर शोर प्रयास किया ताकी उनको सन्मान मिल सके. इसका पहला दौर राजाराम मोहन रॉयने शुरु किया स्त्री पुरुष समानता का स्वीकार करके महिलाओ की शिक्षा पर जोर देकर बालविवाह सती प्रथा जेसी क्रूर प्रथा पर अंकुश लगाया। 1848 मे महात्मा फुलेजीने महिलाओ के लिए पुना मे शिक्षा की सुरुवात कर स्त्री पुरुष समानता के अधिकार को प्रदान करने का सफल प्रयास किया. इसी परंपरा को आगे राजश्री शाहूजी महाराज, आगरकरजी, न्या. रानडेजी और संविधान निर्माता डॉक्टर आंबेडकरजीं ने मुक्ती दिलाने का कार्य किया. महिलाओ का विकास तथा सक्षमीकरण की और ले जाने का अथक प्रयास किया. परिणाम स्वरूप महिलाओ के स्थिती बदलने में इन समाजसुधारको की अहम भूमिका रही।

1947 को भारत देश आजाद हुआ, 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान का गठन किया गया। इस संविधान मे महिलाओ को पुरुषो के बराबर अधिकार प्रदान किया गया. इससे महिला की उन्नती की और एक कदम बढा। आगे महिला सक्षमीकरण तथा राजनीति मे सहभाग बढाने हेतू 1994 मे 73 एवं 74 कानून संशोधन कर पंचायत राज मे 33% आरक्षण का प्रावधान किया. इस प्रकार भारत मे महिलाओ का सन्मान देकर उसे जीवन के हर क्षेत्र मे संमेलित कर समाज परिवर्तन करने का प्रयास हो गया. शायद इसी वजह से गत 75 सालो मैं भारतीय महिलाओ ने अपने कार्य से यह सिद्ध कर दिया की वह अबला नही तो सबला है. भारत की महिला आज क्रीडा, संगीत, साहित्य कला संशोधन तंत्रज्ञान सामाजिक कार्य जैसे विभिन्न क्षेत्र में अपना प्रभाव निरंतर दिखा रही है. भारत वर्ष की पहिली महिला प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिराजी गांधी ने इसका परिचय दिया.वर्तमान राजनीती मे गाव के सरपंच से लेकर राज्य की मुख्यमंत्री तथा देश की राष्ट्र पती पद तक अपना अस्तित्व निर्माण किया.

स्वतंत्रता के पहले महिलाओ की सक्रियता

महात्मा गांधीजींने कहा था की, हमारे माँ, बहनो के सहयोग के बगैर ये संघर्ष संभव नही था। आजादी के समय महिलाओने स्वतंत्रता आंदोलन में पुरुषो के साथ कंधे से कंधा मिलकर देश को आजाद कराया था हमारे स्वतंत्रता संग्राम में राणी लक्ष्मीबाई, मॅडम भिकाजी कामा, कस्तुरबा गांधी, अरुणा असफली, सरोजिनी नायडू, सिस्टर निवेदिता, मीराबेन, कमला नेहरू, इंदिरा गांधी, सुचेता कृपलानी जैसी महिलाओ का नाम इतिहास के पन्नो मे दर्ज हैं। आजादी के बाद बनाये गये संविधान सभा मे 15 महिला शामिल थी। इस संविधानने महिलाओं को पुरुषो के बराबर समान वोट देने का अधिकार दिया। पंचायत से लेकर संसद मे जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुनाव लढने का अधिकार दिया है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की सक्रियता

ऐसा प्रतीत होता है की, स्वतंत्रता की पूर्व काल से ही महिलाए राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रही है। सरोजिनी नायडू को भारतीय राष्ट्र ीय काँग्रेसचे अध्यक्ष के रूप मे चुना गया था और बाद में राज्यपाल के रूप मे भी कार्य किया। यही परंपरा आगे जारी रही। 1952 के पहले लोकसभा चुनाव मे 22 महिलांए चुनी गई।

1963 मे सुचिता कृपलानी नें देश के सबसे बडे राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप मे अपना योगदान दिया. स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने पहिली भारतीय महिला प्रधानमंत्री के रूप मे 1966 मैं देश कि कमान समाधी और देश विदेश की राजनीति पर अपने छाप छोडी.

उपरोक्त महिलाओ के साथ यूपीए तथा काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप मे श्रीमती सोनियाजी गांधी ने कमान संभाली और एक आदर्श बनाया. जुलाई 2007 मे भारत के 12 वे राष्ट्र पती के लिए मतदान हुआ. प्रतिभाताई पाटील पहिली महिला राष्ट्र पती बन गई. श्रीमती मीरा कुमारी और श्रीमती सुमित्रा महाजनने लोकसभा के अध्यक्ष के रूप में अपना योगदान दिया।

इसके साथ श्रीमती उमा भारती श्रीमती वसुंधरा राजे, कुमारी जयललीताजी तथा श्रीमती सुषमा स्वराजजी ने मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्रिमंडल मे कार्य किया.

वर्तमान भारत की राजनीति मे सक्रिय महिलाए

वर्तमान भारत की राजनीति मे अनेक महिला अपना योगदान दे रहे है। केंद्रीय मंत्रीमंडल में 07 महिला मंत्री और लोकसभा में 74, राज्यसभा में 78 संसद अपने विभाग का प्रतिनिधित्व करती नजर आ रही है। आज देश की वर्तमान राजनीति में महिलाओं की हिस्सेदारी कई गुना बढ गयी है कोई महिला किसी बडे राजनीतिक दल की राष्ट्र ीय अध्यक्षता कर रही है तो कोई महिला बतोर राज्य की मुख्यमंत्री प्रदेश की बागडोर संभाल रही है. जिसमे निर्मला सीतारामन भारत की वित्त मंत्री भारत मे ही नही विदेशोतक प्रसिद्ध हैं इसके पहले सीतारमनने देश के रक्षामंत्री पद का कार्यभार संभाला था। वर्तमान मे पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बॅनर्जी पुरे राज्य के जिम्मेदारी संभाल रही है। एक महिला राजनेता की तौर पर यह बडी उपलब्धी हैं की ममता बॅनर्जी लागतार तीन बार राज्य की मुख्यमंत्री के तौर पर कार्यरत है। वह टीएमसी की लीडर भी हैं, और प्रदेश की मुखीया भी। ममता बॅनर्जी केंद्र में लगातार दो बार रेलमंत्री भी रह चुकी हैं।

उत्तर प्रदेश की राजनीती मैं बडा नाम मायावती का हैं. वह पार्टी की प्रमुख भी हैं। खुद में एक ब्रॅण्ड भी। भारतीय राजनीती मैं किसी महिला के लिए यह आसान बात नही हैं। बसपा सुप्रीमो होने के साथ ही मायावती जी उत्तर प्रदेश की चार बार मुख्यमंत्री भी रह चुकी है.

इस दिनो देश की सियासत मे एक महिला का नाम और उनकी सक्रियता बढती जा रही हैं यह महिला हैं काँगेस नेता प्रियंका गांधी व्यक्तिगत जिंदगी छोड सार्वजनिक जीवन मे उतरी प्रियंका गांधी मे इंदिरा गांधी की झलक मिलती हैं.

उपरोक्त महिलाओके साथ आज वर्तमान भारतीय राजनीती मैं अनुप्रिया पटेल, अन्नपुर्णा देवी, सक्षा खडसे, सावित्री ठाकूर, पूनम महाजन, सुप्रिया सुळे, डिंपल यादव जैसी अनेक महिला अपना सक्रिय योगदान दे कर देशसेवा मे अपना जीवन समर्पित कर रही है. इसी महिलाओं की राजनितीक संक्रियता कों चार चाँद लगाने का काम देश की प्रथम महिला के रूप मे देश की राष्ट्रपती महामहिम श्रीमती द्रौपदी मुर्मुजीने किया है. इसी वजह से प्राचीन काल मे सती जानेवाली महिला वर्तमान मे देश के सर्वोच्च राष्ट्रपती पद पर विराजमान हुई है.

सारांश

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

भारतीय राजनीति मे महिलाओ के सक्रियता को लेकर हम बात करे तो भारत के इतिहास में आधुनिक काल ही अधिक महत्त्वपूर्ण आहे. महिला भारत की जनसंख्या का करीब आधा हिस्सा है लेकिन उन्हे अपेक्षा कृत देश मे सन्मान नही मिला. अधिकांश महिलाओ के अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत होने के कारण उन पर समाज और धर्म का प्रभाव ज्यादा देखने को मिला लेकिन उन्होने हार नही मानी. देशभर ऐसी कोई मजबूत महिलाओ की कहानिया सामने आई जिन्होने अपने घरो से बाहर निकलकर साहस, हिम्मत दिखाते हुए कार्य किया. उन्होने अपनी लगन से बदलती दुनिया के अनुसार अपने क्षमता से मंजिल पर पहुच गयी.

संदर्भग्रंथ

1. पाल विनोदकुमार, 2010 - राजनीतिक विचारधारा, डिस्कवरी पब्लीशिंग हाऊस, नई दिल्ली
2. यादव विरेंद्र सिंह, 2011 - बीसवी सदी के महानायक, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली.
3. जौहरी ओजस्विनी, 2019 - महिला सशक्तिकरणा, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
4. धुलिया सुभी अनु.2021 - भारतीय समाज में महिलाए, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
5. बाजवा सेवा सिंघ, 2024 - भारतीय राजनिती एवं महिलाए, दिव्यम प्रकाशन, दिल्ली
6. प्रसाद अनुराधा, 2016 - नारी सशक्तिकरण राजनितीक सहभगिता के संदर्भ में रिगल पब्लिकेशन.
7. http://www.jagran.com

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved